ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

मुन्शी प्रेमचंद: एक महान भारतीय लेखक

संदीप कुमार सुपुत्र सत्यवीर सिंह
गाँव एवं डाकघर- मदीना
जिला रोहतक (हरियाणा)
Email: sandeepkumarmadina@gmail.com

शोध-आलेख सार: मुन्शी प्रेमचंद एक महान भारतीय लेखक थे जो अपने आधुनिक हिंदुस्तानी साहित्य के लिए उल्लेखनीय थे। एक बहुत ही उच्च क्षमता के लेखक, प्रेमचंद के लेखन के पाठकों के दिमाग पर एक बहुत लंबे समय तक स्थायी छाप है। प्रेमचंद एक ऐसे प्रगतिशील लेखक थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य में नई ऊंचाइयों को हासिल किया था। उन्होंने आम आदमी की समस्याओं पर प्रकाश डाला और अपने समय के समाज के लिए एक दर्पण आयोजित किया। उनके लेखन का स्थायी प्रभाव पड़ा; उन्होंने समय-सामंती, गरीबी, उपनिवेशवाद, भ्रष्टाचार आदि के यथार्थवादी मुद्दों को उठाया। उन्होंने लघु कथाएँ, उपन्यास और कई निबंधों को लिखा। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में पंच परमेश्वर, गोडान, गबन, करमभूमि और मनोरमा शामिल हैं।

मूलशब्द: उपन्यास, कृतियाँ, साहित्य, प्रगतिशील, गरीबी, उपनिवेशवाद ।

मुन्शी प्रेमचंद का प्रारंभिक जीवन: उनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस गांव के गांव लमाही में हुआ था। वह धनपतरी के रूप में पैदा हुआ था और प्रेमचंद उनके छद्म नाम थे। उनके माता-पिता अजैब लाल और आनंदी थे। उनके माता-पिता ने उन्हें धनपत राय का नाम दिया, जबकि उनके चाचा, महाबिर, एक अमीर जमींदार, ने उन्हें "नवाब" नाम दिया। प्रेमचंद ने अपना पहला पेन नाम "नवाब राय" चुना।

मुंशी प्रेमचंद की शिक्षा: उनकी प्रारंभिक शिक्षा एक मौलवी के तहत मदरसा में थी, जहां उन्होंने उर्दू और फारसी को सीखा था। अपनी मां के निधन के बाद, उन्हें उपन्यास में सांत्वना मिली, जो बाद में मोह में बदल गई। उन्होंने एक पुस्तक थोक व्यापारी के लिए किताबें बेचने का काम

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

किया, जिससे उसे बहुत सारी किताबें पढ़ने की संभावना मिली। उन्होंने एक मिशनरी स्कूल में अंग्रेजी सीख ली बाद में 1890 के दशक के मध्य में उन्होंने बेनारस में क्वीन्स कॉलेज में एक दिन के विद्वान के रूप में नामांकित किया।

मुन्शी प्रेमचंद का काम: प्रेमचंद ने एक बहुत ही सीधी और सरल शैली में लिखा और उनके शब्दों ने अपना जादू बनाया। उनका किरदार हमेशा उसके आस-पास के लोगों को लोगो को अच्छा लगता था । मानव मनोविज्ञान का ज्ञान और जीवन की विडंबनाओं की उनकी प्रशंसा ने उन्हें एक तारकीय लेखक बनाया। अपनी साफ-साफ शैली और स्पष्ट तरीके से ध्यान में रखते हुए, प्रेमचंद को पढ़ना में बहुत ख़ुशी मिलते थी । उनकी गद्य सटीक है और उनके विवरण संक्षिप्त हैं।

प्रेमचंद ने पहली बार उर्दू उपन्यासों के लिए चुना जो कि हिंदी में अपने बाद के कैरियर पर फारसी साहित्य के मजबूत प्रभाव को विशेष रूप से छोटी कहानियों में दर्शाते हैं। रोमांटिक प्रेम कहानियां आम तौर पर ऐसे चित्रित करती हैं, जिनमें प्यार के पाठ्यक्रम में आसान जीवनशैली के साथ बहती है, विभिन्न असामान्य डिवाइसों को एक साथ फिर से देशभक्त 1920 में, प्रेमचंद ने एक सरकारी हाई स्कूल से इस्तीफा दे दिया और मोहनदास गांधी के कट्टर समर्थक बन गए और बापूजी के उनके गैर-सहयोग आंदोलन में शामिल हो गए, जिनके प्रभाव ने 1920 से 1 9 32 तक प्रेमचंद के काम को जोरदार ढंग से चिह्नित किया।

साहित्यिक रुचि: गरीबी, अभाव, शोषण तथा उत्पीड़न जैसी जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी प्रेमचन्द के साहित्य की ओर उनके झुकाव को रोक न सकी। प्रेमचन्द जब मिडिल में थे तभी से आपने उपन्यास पढ़ना आरंभ कर दिया था। आपको बचपन से ही उर्दू आती थी। आप पर नॉवल और उर्दू उपन्यास का ऐसा उन्माद छाया कि आप बुकसेलर की दुकान पर बैठकर ही सब नॉवल पढ़ गए। आपने दो - तीन साल के अन्दर ही सैकड़ों नॉवेलों को पढ़ डाला।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

आपने बचपन में ही उर्दू के समकालीन उपन्यासकार सरुर मोलमा शार, रतन नाथ सरशार आदि के दीवाने हो गये कि जहाँ भी इनकी किताब मिलती उसे पढ़ने का हर संभव प्रयास करते थे। आपकी रुचि इस बात से साफ झलकती है कि एक किताब को पढ़ने के लिए आपने एक तम्बाकू वाले से दोस्ती करली और उसकी दुकान पर मौजूद "तिलस्मे - होशरुबा" पढ़ डाली।

अंग्रेजी के अपने जमाने के मशहूर उपन्यासकार रोनाल्ड की किताबों के उर्दू तरजुमो को आपने काफी कम उम्र में ही पढ़ लिया था। इतनी बड़ी - बड़ी किताबों और उपन्यासकारों को पढ़ने के बावजूद प्रेमचन्द ने अपने मार्ग को अपने व्यक्तिगत विषम जीवन अनुभव तक ही महदूद रखा।

तेरह वर्ष की उम्र में से ही प्रेमचन्द ने लिखना आरंभ कर दिया था। शुरु में आपने कुछ नाटक लिखे फिर बाद में उर्दू में उपन्यास लिखना आरंभ किया। इस तरह आपका साहित्यिक सफर शुरु हुआ जो मरते दम तक साथ - साथ रहा।

प्रेमचन्द की कृतियाँ: प्रेमचन्द ने अपने नाते के मामू के एक विशेष प्रसंग को लेकर अपनी सबसे पहली रचना लिखी। १३ साल की आयु में इस रचना के पूरा होते ही प्रेमचन्द साकहत्यकार की पंक्ति में खड़े हो गए। सन् १८९४ ई० में "होनहार बिरवार के चिकने-चिकने पात" नामक नाटक की रचना की। सन् १८९८ में एक उपन्यास लिखा। लगभग इसी समय "रुठी रानी" नामक दूसरा उपन्यास जिसका विषय इतिहास था की रचना की। सन १९०२ में प्रेमा और सन् १९०४-०५ में "हम खुर्मा व हम सवाब" नामक उपन्यास लिखे गए। इन उपन्यासों में विधवा-जीवन और विधवा-समस्या का चित्रण प्रेमचन्द ने काफी अच्छे ढंग से किया।

जब कुछ आर्थिक निर्जिंश्चतता आई तो १९०७ में पाँच कहानियों का संग्रह सोड़ो वतन (वतन का दुख दर्द) की रचना की।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

जैसा कि इसके नाम से ही मालूम होता है, इसमें देश प्रेम और देश को जनता के दर्द को रचनाकार ने प्रस्तुत किया। अंग्रेज शासकों को इस संग्रह से बगावत की झलक मालूम हुई। इस समय प्रेमचन्द नायाबराय के नाम से लिखा करते थे। लिहाजा नायाब राय की खोज शुरु हुई। नायाबराय पकड़ लिये गए और शासक के सामने बुलाया गया। उस दिन आपके सामने ही आपकी इस कृति को अंग्रेजी शासकों ने जला दिया और बिना आज्ञा न लिखने का बंधन लगा दिया गया।

इस बंधन से बचने के लिए प्रेमचन्द ने दयानारायण निगम को पत्र लिखा और उनको बताया कि वह अब कभी नयाबराय या धनपतराय के नाम से नहीं लिखेंगे तो मुंशी दयानारायण निगम ने पहली बार प्रेमचन्द नाम सुझाया। यहीं से धनपतराय हमेशा के लिए प्रेमचन्द हो गये।

"सेवा सदन", "मिल मजदूर" तथा १९३५ में गोदान की रचना की। गोदान आपकी समस्त रचनाओं में सबसे ज्यादा मशहूर हुई अपनी जिन्दगी के आखिरी सफर में मंगलसूत्र नामक अंतिम उपन्यास लिखना आरंभ किया। दुर्भाग्यवश मंगलसूत्र को अधूरा ही छोड़ गये। इससे पहले उन्होंने महाजनी और पूँजीवादी युग प्रवृत्ति की निन्दा करते हुए "महाजनी सभ्यता" नाम से एक लेख भी लिखा था।

प्रेमचंद की सर्वोत्तम 15 कहानियां:

1. बड़े घर की बेटी
2. रानी सारन्धा
3. नमक का दरोगा
4. सौत
5. आभूषण
6. प्रायश्चित
7. कामना
8. मन्दिर और मसजिद
9. घासवाली
10. महातीर्थ
11. सत्याग्रह
12. लांछन

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

13. सती

14. लैला

15. मन्त्र"

हिन्दी साहित्य के सबसे अधिक पढ़े जाने वाले और लोकप्रिय लेखक प्रेमचंद जी ने हिन्दी में कहानी और उपन्यास को सुदृढ़ नीव प्रदान की और यथार्थवादी चित्रण से देशवासियों का दिल जीत लिया। भारतीय समाज की कुरीतियों और विडम्बनाओं को अपनी कहानियों का विषय बनाने वाले प्रेमचंद जी का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। प्रेमचंद जी का मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। अपने मित्र मुंशी दयानारायण निगम के सुझाव पर धनपत राय की बजाय प्रेमचंद के उपनाम से लिखने लगे थे। प्रेमचंद जी हिन्दी और उर्दू के महानतम लेखकों में से एक हैं।

गाँधी जी के आवहान पर सरकारी नौकरी छोडने वाले प्रेमचंद जी की कहानियों में समाज के सभी वर्गों का चित्रण बहुत ही सहज और स्वाभाविक ढंग से देखने को मिलता है। हिन्दी कहानी के विकास में प्रेमचंद जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्हें **मुंशी प्रेमचंद** व **नवाब राय** नाम से भी जाना जाता है। प्रेमचंद जी को **उपन्यास सम्राट** के नाम से सर्वप्रथम बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने संबोधित किया था।

प्रेमचंद जी की प्रारंभिक कहानियाँ आर्दशवादी थीं जिनका मूल उद्देश्य था "सच्चे का बोलबाला झूठे का मुँह काला।" किन्तु बाद में उनका दृष्टीकोंण यर्थाथवादी हो गया। हममें से लगभग सभी लोग प्रेमचंद जी की कहानियों को किसी न किसी कक्षा में जरूर पढे होंगे। ईदगाह, पंचपरमेश्वर, बडे भाई साहब, ठाकुर का कुंआ, मंत्र आदि कहानियों के पात्र इतने सजीव प्रतीत होते हैं कि मानो वे अपने आसपास ही हों।

अवध के किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया उपन्यास 'प्रेमाश्रम' किसानो के जीवन पर लिखा हिंदी का संभवतः पहला उपन्यास

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

है। किसानो और मजदूरों पर हो रहे शोषण की वेदना को प्रेमचंद जी की कहानियों में अक्सर देखा जा सकता है। 'पूस की रात' में तो प्रेमचंद जी ने बडी कुशलता से निरुपित किया है कि इस दुनिया में हमें आत्मियता जानवरों से तो मिल सकती है किन्तु इंसानो से इसकी अपेक्षा नही करनी चाहिये। व्यक्तिगत जीवन में भी मुंशी प्रेमचंद जी सरल एवं सादगीपूर्ण जीवन यापन करते थे, दिखावटी तामझाम से दूर रहते थे। एक बार किसी ने प्रेमचंद जी से पूछा कि – "आप कैसे कागज और कैसे पैन से लिखते हैं ?"मुंशी जी, सुनकर पहले तो जोरदार ठहाका लगाये फिर बोले – "ऐसे कागज पर जनाब, जिसपर पहले से कुछ न लिखा हो यानि कोरा हो और ऐसे पैन से , जिसका निब न टूटा हो।' थोडा गम्भीर होते हुए बोले – "भाई जान ! ये सब चोंचले हम जैसे कलम के मजदूरों के लिये नही है।"

मुशी प्रेमचंद जी के लिये कहा जाता है कि वो जिस निब से लिखते थे, बीच बीच में उसी से दाँत भी खोद लेते थे। जिस कारण कई बार उनके होंठ स्याही से रंगे दिखाई देते थे।प्रेमचंद ने साहित्य को सच्चाई के धरातल पर उतारा। उन्होंने जीवन और कालखंडों को पन्ने पर उतारा। वे सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, जमींदारी, कर्जखोरी, गरीबी, उपनिवेशवाद पर आजीवन लिखते रहे। ये कहना अतिश्योक्ति न होगी कि वे आम भारतीय के रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में वे नायक हुए, जिसे भारतीय समाज अछूत और घृणित समझता था। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि लेखक स्वभाव से प्रगतिशील होता है और जो ऐसा नहीं है वह लेखक नहीं है। मुंशी प्रेमचंद बहुत ही हसमुँख स्वभाव के थे, उनकी हँसी मशहूर थी। एक बार इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एक व्याख्यान के उपरान्त एक छात्र ने उनसे पूछा- "आपके जीवन की सबसे बडी अभिलाषा क्या है?" प्रेमचंद जी अपनी चिरपरिचित हँसी के साथ बोले- "मेरे

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा ये है कि ईश्वर मुझे सदा मनहूसों से बचाये रखे।"

प्रेमचंद जी 1916 से 1921 के बीच गोरखपुर के नोरमल हाई स्कूल में में असिस्टेंट मास्टर के पद पर रहे और इसी दौरान "सेवा सदन" सहित चार उपन्यासों की रचना की .

प्रेमचंद हिन्दी सिनेमा के सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्यकारों में से एक हैं। सत्यजित राय ने उनकी दो कहानियों पर यादगार फ़िल्में बनाईं। 1977 में 'शतरंज के खिलाड़ी' और 1981 में 'सद्गति'। के. सुब्रमण्यम ने 1938 में 'सेवासदन' उपन्यास पर फ़िल्म बनाई जिसमें सुब्बालक्ष्मी ने मुख्य भूमिका निभाई थी। 1977 में मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी 'कफ़न' पर आधारित 'ओका ऊरी कथा' नाम से एक तेलुगू फ़िल्म बनाई जिसको सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। 1963 में 'गोदान' और 1966 में 'गबन' उपन्यास पर लोकप्रिय फ़िल्में बनीं। 1980 में उनके उपन्यास पर बना टीवी धारावाहिक 'निर्मला' भी बहुत लोकप्रिय हुआ था।

प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उन्होने उजागर किया जिससे लोग अनभिज्ञ थे। यह पुस्तक 1944 में पहली बार प्रकाशित हुई थी। शिवरानी देवी प्रेमचंद जी की दूसरी पत्नी थीं, जो बाल विधवा थीं। इस तरह प्रेमचंद जी ने विधवा पुर्नविवाह को प्रोत्साहन दिया।

निष्कर्ष: प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक हैं। उन्होंने हिंदी और उर्दू में पूरे अधिकार से लिखा। उनकी अधिकांश रचनाएं मूल रूप से उर्दू में लिखी गई हैं लेकिन उनका प्रकाशन हिंदी में पहले हुआ। 33 वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौप गए जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी,

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में भी उनकी कहानियाँ लोकप्रिय हुई हैं।सन् १९३६ ई० में प्रेमचन्द बीमार रहने लगे। अपने इस बीमार काल में ही आपने "प्रगतिशील लेखक संघ" की स्थापना में सहयोग दिया। आर्थिक कष्टों तथा इलाज ठीक से न कराये जाने के कारण ८ अक्टूबर १९३६ में आपका देहान्त हो गया। और इस तरह वह दीप सदा के लिए बुझ गया जिसने अपनी जीवन की बत्ती को कण-कण जलाकर भारतीयों का पथ आलोकित किया। उनकी साधारण मुहावरेदार भाषा आसानी से समझ में आती है और गहराई से दिल में उतर जाती है।आज भी मुंशी प्रेमचंद जी हम सब के बीच अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से जीवित हैं।

संदर्भ:

- https://www.bharatdarshan.co.nz/author-profile/8/author8.html
- प्रेमचंद द्वारा ग्यारह कहानियां एन.डी. वेब। 20 फरवरी 2013। <http://www.dilsedesi.co/ मंचों / index.php? एप्लिकेशन = कोर और मॉड्यूल ..>।
- जेसी, एस्टबरी। "प्रेमचंद में शोषण और विवेक"। उर्दू अध्ययन की वार्षिक एन। डी vol.26 .2011: 266-73
- गुप्ता, चुरु "प्रेमचंद की कहानियों में महिलाओं का चित्रण: ए क्रिटिक" .सामाजिक वैज्ञानिक मई जून 1991: 88-113
- महेन्द्रन । "प्रेमचंद की एक छोटी कहानी पर एक क्रिटिकल नोट ऑन द पंचायत"। भाषा भारत में जून 2012: 200-204
- रंगार रेडबेर्ड, एंटोन लावी हो सकता है कि आज का तर्क तर्कसंगत है। लंदन: विश्वविद्यालय C.1910.E पुस्तक।
- सिगी।, रेखा। मुन्शी प्रेमचंद नई दिल्ली: हीरा पॉकेट पुस्तकें लि .2006